# संस्कृत कैसे सीखें ?
# (स्त्री प्रत्यय)
# How to Learn Sanskrit ?
# (Stri Pratyaya)

**आकृति ठाकुर[1] एवं योगेश शर्मा[2]**

**Aakriti Thakur[1] and Yogesh Sharma[2]**

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakrititthakur2@gmail.com, ycsharma2000@yahoo.co.in

https://doi.org/10.5281/zenodo.16967042

भाषा में व्याकरण की भूमिका शब्द आदि के विश्लेषण के द्वारा शब्दबोध अथवा अर्थबोध की प्रक्रिया के रूप में होती है। व्याकरण की यह भूमिका कभी–कभी भाषा के सम्प्रेषणात्मक विस्तार की कारक भी बनती है। भाषा का सामर्थ्य उसके शब्दरत्नाकर पर निर्भर करता है। जैसा शब्द–सागर वैसी ही अर्थ–गाम्भीर्य की गहराई, परन्तु यहाँ एक तथ्य विश्लेष्य है कि शब्द–भण्डार मात्र से भाषा की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती और न ही अर्थ का विस्तार। इसके लिए तो आवश्यक है, शब्दों के पारस्परिक अन्वयबोध की प्रक्रिया, जिससे वाक्य की सार्थक प्रक्रिया पूर्ण होती है। शब्द के अन्वयात्मक उपक्रम में शब्दों की अपनी–अपनी भूमिका का बोध एवं प्रयोजनमूलक दृष्टि का होना भी आवश्यक है। कौनसा शब्द किस देश और समय से सम्बद्ध है? उसका किस अर्थ हेतु प्रयोग किया जा रहा है। वह किस व्यक्ति अथवा वस्तु से सम्बद्ध है एवं किसके बोधन में उस शब्द विशेष का प्रयोग किया जा रहा है। इस प्रकार उपर्युक्त शब्द–शिल्प–विधान एवं शब्द–विनियोग की प्रक्रिया से वाक्य–निर्मिति पूर्ण होती है। वाक्य में शब्द के विनियोग की प्रक्रिया हेतु शब्द के वचन और लिंग की आवश्यकता होती है। इन दोनों में लिंग की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कौन सा शब्द किस लिंग में है, इस बात पर अर्थबोध का निश्चय होता है। भाषा के व्यवहार में अनेकशः देखा जाता है कि शब्द के लिङ्ग–अनिश्चय की स्थिति में अर्थ का प्रकार्यात्मक परिणाम भी दूषित हो जाता है। इसलिए संस्कृत व्याकरण में लिंग–विनिश्चय के लिए अनेक स्तरों पर विचार किया गया है। इनमें से प्रत्ययों के आधार पर किया गया विचार सार्थक एवं युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

जैसा कि पूर्व के लेखों में व्याकरण में प्रत्ययों की भूमिका पर विशदता से विमर्श किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि कृत और तद्धित प्रत्यय न केवल भाषा का विश्लेषण करते हैं, अपितु ये भाषा का विस्तार भी करते हैं। इन प्रत्ययों के विश्लेषण के द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि धातु से जो प्रत्यय लगते हैं, वे क्रिया, संज्ञा, विशेषण आदि की निर्मिति कर कृत प्रत्यय कहलाते हैं। और इन प्रत्ययों से बनने वाले शब्द कृदन्त कहलाते हैं। कुछ प्रत्यय शब्द के साथ लगकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, आदि शब्दों का निर्माण करते हैं, जो तद्धित कहलाते हैं एवं इनसे बनने वाले शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं। उपर्युक्त दोनों प्रत्ययों की भूमिका लिंग निर्धारण में भी होती है। इन प्रत्ययों में कुछ प्रत्यय ऐसे होते हैं, जिनसे बनने वाले शब्द या तो पुल्लिंग होते हैं या स्त्रीलिंग या नपुंसकलिंग। जैसे धातु के साथ 'घञ्' और 'कि' प्रत्यय से बनने वाले सभी शब्द पुल्लिंग होते हैं –

| क्रम संख्या | प्रत्यय विधान | | शब्द | लिङ्ग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | रम् + घञ् | = | रामः | पुल्लिंग |
| 2. | पच् + घञ् | | पाकः | पुल्लिंग |
| 3. | प्र + धा + कि | | प्रधिः | पुल्लिंग |
| 4. | उप + धा + कि | | उपधिः | पुल्लिंग |

इसी प्रकार धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगने पर सभी शब्द स्त्रीलिंग होते हैं –

| क्रम संख्या | प्रत्यय विधान | | शब्द | लिङ्ग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कृ + क्तिन् | = | कृतिः | स्त्रीलिंग |
| 2. | स्तु + क्तिन् | | स्तुतिः | स्त्रीलिंग |
| 3. | सम् + पद् + क्तिन् | | सम्पत्तिः | स्त्रीलिंग |
| 4. | कॄ + क्तिन् | | कीर्णि: | स्त्रीलिंग |

ठीक ऐसे ही भाव अर्थ में धातु के साथ 'क्त' प्रत्यय लगने से निर्मित शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं – हस् + क्त = हसितम्

धातु के साथ 'ल्युट्' प्रत्यय लगने से शब्द की निर्मिति नपुंसकलिंग में होती है –

| क्रम संख्या | प्रत्यय विधान | | शब्द | लिङ्ग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हस् + ल्युट् | = | हसनम् | नपुंसकलिंग |
| 2. | अद् + ल्युट् | | अदनम् | नपुंसकलिंग |
| 3. | लिख् + ल्युट् | | लेखनम् | नपुंसकलिंग |
| 4. | कृ + ल्युट् | | करणम् | नपुंसकलिंग |
| 5. | चल् + ल्युट् | | चलनम् | नपुंसकलिंग |

तद्धित प्रत्ययों के अन्तर्गत भी जो शब्द प्रायशः 'विनिँ', 'इनिँ' एवं 'ग्मिनिँ' प्रत्यय के लगने से बनते हैं, वे सभी शब्द सामान्यतः पुल्लिंग होते हैं –

| क्रम संख्या | प्रत्यय विधान | | शब्द | लिङ्ग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दण्ड + इनिँ | = | दण्डी | पुल्लिंग |
| 2. | वाच् + ग्मिनिँ | | वाग्मी | पुल्लिंग |
| 3. | यशस्+ विनिँ | | यशस्वी | पुल्लिंग |
| 4. | माया + विनिँ | | मायावी | पुल्लिंग |

इस प्रकार कृत और तद्धित प्रत्यय धातु और शब्दों से नवीन शब्दों की निर्मिति करते हैं। साथ ही, कहीं–कहीं लिङ्ग–निर्धारण में भी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाने हेतु व्याकरण में स्त्रीप्रत्ययों की व्यवस्था देखने को मिलती है। स्त्रीप्रत्यय पुल्लिंग आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्दों के निर्माण में भूमिका का निर्वाह करते हैं।

व्याकरण के ग्रन्थों में स्त्रीप्रत्ययों का क्रम कृत और तद्धित के पूर्व में निश्चित है। इनका विधान प्रायशः कृदन्त एवं तद्धितान्त शब्दों के साथ किया जाता है। इसका कारण सम्भवतः यही है कि प्रत्यय का प्रयोग सामान्यतः अर्थबोध की प्रक्रिया में सहायक होता है। स्त्री–प्रत्ययान्त शब्दों का अर्थ कृत एवं तद्धित प्रत्ययों के अर्थबोध पर निर्भर करता है। साथ ही, कुछ स्त्रीप्रत्ययों का विधान कुछ निश्चित कृत एवं तद्धित प्रत्ययों से बनने वाले शब्दों के साथ निर्धारित है। वह इसलिए क्योंकि स्त्रीलिंग के निर्धारण एवं अर्थावगम की प्रक्रिया में स्त्रीप्रत्यय पुल्लिंग आदि शब्दों के साथ लगकर ही स्त्रीलिंग शब्दों का निर्धारण करते हैं।

स्त्री प्रत्ययों के अन्तर्गत टाप् (आ), डाप् (आ), चाप् (आ), ङीप् (ई), ङीष् (ई), ङीन् (ई), ऊङ् (ऊ), ति, ष्फ आदि से स्त्रीलिंग शब्दों की निर्मिति होती है। इनसे बनने वाले शब्द हैं –

| क्रम संख्या | पुल्लिंग शब्द | स्त्रीप्रत्यय | स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|---|
| 1. | अजः | टाप् (आ) | अजा | बकरी |
| 2. | अश्वः | | अश्वा | घोड़ी |
| 3. | बालः | | बाला | लड़की |
| 4. | मेधः | | मेधा | बुद्धिमती |
| 5. | गंगः | | गंगा | नदी विशेष |
| 6. | शूर्पनखः | | शूर्पणखा | शूर्प के समान नाखून वाली |
| 7. | भवान् | ङीप् (ई) | भवती | आप (सर्वनाम) |
| 8. | कुरुचरः | | कुरुचरी | कुरु देश में घूमने वाली स्त्री |
| 9. | देवः | | देवी | देवी |
| 10. | तरुणः | | तरुणी | युवति |
| 11. | गर्गः | | गार्गी | गर्ग गोत्र की स्त्री |
| 12. | कुमारः | | कुमारी | अविवाहित कन्या |
| 13. | यादृशः | | यादृशी | जैसी |
| 14. | गर्गः | ङीष् (ई) | गार्ग्यायणी | गर्ग की पुत्री |
| 15. | नर्तकः | | नर्तकी | नृत्य करने वाली |
| 16. | अनड्वहः | | अनड्वाही | गाय |
| 17. | बह्वः | | बह्वी | बहुत (स्त्रीलिंग) |
| 18. | रात्रिः | | रात्री | रात |
| 19. | गोपः | | गोपी | गायों को रखने वाली |
| 20. | भवः | | भवानी | माता पार्वती |
| 21. | रुद्रः | | रुद्राणी | माता पार्वती |
| 22. | चन्द्रमुखः | | चन्द्रमुखी | चन्द्रमा के समान मुख वाली |
| 23. | अतिकेशः | | अतिकेशी | बालों का अतिक्रमण करने वाली |
| 24. | कुरुः | ऊङ् (ऊ) | कुरूः | कुरुजाति की स्त्री |
| 25. | पंगुः | | पंगूः | लँगड़ी |
| 26. | श्वसुरः | | श्वश्रूः | सास |

| | श्वसुरः | | श्वश्रूः | |
|---|---|---|---|---|
| 27. | नरः | ङीन् (ई) | नारी | स्त्री |
| 28. | ब्राह्मणः | | ब्राह्मणी | ब्राह्मण स्त्री |
| 29. | शार्ङ्गरवः | | शार्ङ्गरवी | शृंगरु की पुत्री |
| 30. | युवकः | ति | युवतिः | युवा स्त्री |

यदि प्रत्ययों की क्रमगत प्रक्रिया के आधार पर स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों का विश्लेषण किया जाए तो संस्कृतकाव्य, स्तोत्र आदि को सरलता एवं सुगमता से समझा जा सकता है। यहाँ तक की जिन कवियों और स्तोत्रकारों को इनके व्युत्पन्न प्रयोग का ज्ञान होता है, वे अद्‌भुत काव्य एवं स्तोत्रों की सर्जना करते हैं। इस प्रकार के प्रत्ययान्त शब्द–ज्ञान से काव्यसर्जकों को अनेक प्रकार के लालित्यपूर्ण एवं आकर्षक छन्दों में काव्यसर्जना में सहायता मिलती है, जिससे मनोगत सरस संवेदनाओं की रसाप्लावित, हृदयान्वित एवं चित्तोत्कर्षक शैली में अभिव्यक्ति की जा सकती है। सामान्यतः स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों के विछित्तिपूर्ण प्रयोग देवी (शक्ति) के स्तोत्रों में परिलक्षित होते हैं। आचार्य शंकरविरचित अनेक स्तोत्र ऐसे ही हैं, जिनमें शक्ति के लिए चमत्कारपूर्ण शब्दों के प्रयोग प्राप्त होते हैं। शिखरिणी छन्द में आनन्दलहरी का पद्य द्रष्टव्य है –

नवीनार्कभ्राजन्मणिकनकभूषापरिकरै
**वृताङ्गी सारङ्गीरुचिरनयनाङ्गीकृतशिवा**।
तडित्पीता पीताम्बरललितमञ्जीरसुभगा
ममापर्णा पूर्णा निरवधिसुखैरस्तु **सुमुखी** ।।

(*आनन्दलहरी*, 5)

अर्थात् नवोदित सूर्य के सदृश देदीप्यमान मणि और स्वर्णाभूषणों से जिनके अङ्ग अलङ्कृत हैं। मृगी के नेत्रों के समान जिनके सुन्दर नेत्र हैं, जिन्होंने शिव को पतिरूप में अङ्गीकृत कर लिया है। विद्युत् के सदृश जो पीतप्रभा हैं, जो पीताम्बर से एवं ललितमञ्जीर को धारण करके सुशोभित हो रही हैं, ऐसी वे निरवधि आनन्द से परिपूर्ण भगवती अपर्णा मुझ पर प्रसन्न हों।

उपर्युक्त पद्य में अनेक स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द प्रयुक्त हैं, जिनमें **वृताङ्गी**, **सारङ्गी**, **सुमुखी** एवं **रुचिरनयनाङ्गी** आदि शब्द 'ङीप्' एवं 'ङीष्' प्रत्ययान्त हैं। इन दोनों प्रत्ययों का 'ई' शेष रहता है। इस आधार पर –

| **क्रम संख्या** | **पुल्लिंग शब्द** | | **स्त्री प्रत्यय** | **स्त्री प्रत्ययन्त शब्द** | **अर्थ** |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वृताङ्ग | + | ङीप् (ई) | वृताङ्गी | आभूषणों से अलंकृत अंगों वाली |
| 2. | सारङ्ग | | ङीप् (ई) | सारङ्गी | मृगी |
| 3. | सुमुख | | ङीष् (ई) | सुमुखी | सुन्दर मुख वाली |
| 4. | रुचिरनयनाङ्ग | | ङीष् (ई) | रुचिरनयनाङ्गी | सुन्दर नयनों वाली |

वृताङ्गी, सारङ्गी एवं सुमुखी शब्द निष्पन्न होते हैं। इसी प्रकार पद्य में प्रयुक्त शिव शब्द में टाप् प्रत्यय प्रयुक्त है –

शिव + टाप् (आ) = **शिवा (पार्वती)**

इसी प्रकार के अनेक प्रयोग देवीकवच (*मार्कण्डेय पुराण*) में भी दिखते हैं –

प्रथमं **शैलपुत्री** च द्वितीयं **ब्रह्मचारिणी**।
तृतीयं **चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति** चतुर्थकम् ।।
पञ्चमं **स्कन्दमातेति** षष्ठं **कात्यायनीति** च।
सप्तमं **कालरात्रीति महागौरीति** चाष्टमम् ।।
uoea**सिद्धिदात्री** च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः ।।

उपर्युक्त श्लोकों में देवी के नौ स्वरूपों का वर्णन किया गया है, जिन्हें नवदुर्गा कहा जाता है। नवदुर्गा हेतु प्रयुक्त सभी शब्द स्त्री–प्रत्ययान्त हैं –

| क्रम संख्या | पुल्लिंग शब्द | प्रत्यय-विधान | स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|---|
| 1. | शैलपुत्र | ङीप् (ई) | शैलपुत्री | पर्वतराज (हिमालय) की पुत्री |
| 2. | ब्रह्मचारी | ङीप् (ई) | ब्रह्मचारिणी | ब्रह्मचर्य का आचरण करने वाली |
| 3. | चन्द्रघण्ट | टाप् (आ) | चन्द्रघण्टा | मस्तक पर चन्द्र को घण्टा के रूप में धारण करने वाली |
| 4. | कूष्माण्ड | टाप् (आ) | कूष्माण्डा | ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाली |
| 5. | स्कन्दमाता (स्त्रीलिंग) | - | स्कन्दमाता | स्कन्द (कार्तिकेय) की माता |
| 6. | कात्यायन | ङीष् (ई) | कात्यायनी | कात्यायन ऋषि सम्बन्धिनी |
| 7. | कालरात्र | ङीष् (ई) | कालरात्रि | रात्रि के सामान वर्ण वाली |
| 8. | महागौर | ङीष् (ई) | महागौरी | महान् गौर वर्ण वाली |
| 9. | सिद्धिदातृ | ङीप् (ई) | सिद्धिदात्री | सिद्धि प्रदान करने वाली |

शब्दों के साथ स्त्री–प्रत्यय का ज्ञान इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि वाक्य–निर्माण में प्रयुक्त होने वाले शब्द, कारक एवं विभक्ति के प्रयोग प्रत्ययान्त एवं निष्पन्न शब्दों के आधार पर ही होते हैं। किसी भी प्रकार के सुबन्त पदों में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग शब्दों की निश्चयात्मक स्थिति में ही उनके प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी एवं सप्तमी आदि विभक्तियों के रूप बनते हैं और उसी आधार पर अर्थ का निर्धारण होता है। कभी–कभी प्रत्ययों के ज्ञान के अभाव में शब्द के लिंग–अनिश्चय की स्थिति बन जाती है अथवा मिथ्याज्ञान का निश्चयात्मक बोध होता है, ऐसी स्थिति में भी प्रत्ययात्मक बोध से ही सही लिंग का ज्ञान होता है। उदाहरणार्थ– साक्षी, समाधि, उपाधि, सन्धि, पूर्वी इत्यादि शब्द प्रथमदृष्ट्या एवं पहली बार सुनने में स्त्रीलिंग के प्रतीत होते हैं, किन्तु उपर्युक्त सभी शब्द पुल्लिंग के अन्तर्गत परिगणित होते हैं। इसका मुख्य कारण प्रत्यय–विधान एवं व्याकरणशास्त्र की परम्परा का विनियोग है। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि सभी 'कि' प्रत्ययान्त शब्द सदैव पुल्लिंग में परिगणित होते हैं। इस आधार पर –

| क्रम संख्या | प्रत्यय-विधान | शब्द |
|---|---|---|
| 1. | सम्+ आङ्+ धा+ कि | समाधिः |
| 2. | उप+ आङ्+धा+कि | उपाधिः |
| 3. | सम् + धा+ कि | सन्धिः |

उपर्युक्त शब्दों में 'कि' प्रत्यय का प्रयोग होने से पुल्लिंग की प्राप्ति होती है। वहीं साक्षी, पूर्वी आदि शब्दों में 'इनिँ' प्रत्यय होने से पुल्लिंग की स्थिति निश्चित होती है, क्योंकि 'णिनिँ' और 'इनिँ' दोनों प्रत्ययों से निष्पन्न शब्द सामान्यतः एवं प्रथमतः पुल्लिंग होते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि 'णिनिँ' और 'इनिँ', इन दोनों प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों के अन्त में 'इन्' का प्रयोग होता है और जब वाक्य आदि में उसका प्रयोग सुबन्त पद के रूप में होता है तो वहाँ 'न्' का लोप और पूर्व स्वर का दीर्घ हो जाता है। इस प्रक्रिया को इस प्रकार समझा जा सकता है–

सह + अक्ष + इनिँ

स + अक्ष + इनिँ

स + अक्ष + इन्

स + अक्ष् + इन्

साक्षिन्

साक्षिन् + सुँ (प्रथमा विभक्ति एकवचन में सुबन्त पद बनाने वाला प्रत्यय)

साक्षिन् + सुँ

साक्षीन् + सुँ ('सुँ' प्रत्यय से पूर्व में 'न्' वर्ण के पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है।)

साक्षीन् + स् ('सुँ' प्रत्यय में 'स्' ही शेष बचता है। चूँकि 'स्' एक वर्ण वाला प्रत्यय है, इसलिए इसे अपृक्त कहते हैं और जो अपृक्त व्यंजन वर्ण के बाद होता है, उसका लोप हो जाता है।)

साक्षीन् (शब्द की सिद्ध अवस्था की प्रक्रिया में आदि पद के अन्त में 'न्' हो तो उसका लोप हो जाता है। ऐसा व्याकरण का नियम है।)

**साक्षी**

उपर्युक्त प्रक्रिया से ऐसा शब्द (साक्षी) निष्पन्न होता है।

इसी आधार पर जितने भी 'इन्' प्रत्ययान्त शब्द हैं, वे सभी मूलतः पुल्लिंग ही होते हैं। जैसे–

| क्रम संख्या | मूल शब्द (पुल्लिंग) | प्रत्यय | अर्थ |
|---|---|---|---|
| 1. | मेधावी | विनिँ | धारणा शक्ति वाला |
| 2. | मायावी | विनिँ | माया वाला |
| 3. | पूर्वी | इनिँ | पहले काम करने वाला |
| 4. | कृतपूर्वी | इनिँ | जिसने पहले कार्य किया है |
| 5. | इष्टी | इनिँ | जिसने यज्ञ किया है |
| 6. | वाग्मी | ग्मिनिँ | कुशल वक्ता |
| 7. | यशस्वी | विनिँ | यश वाला |
| 8. | व्रीही | इनिँ | धान वाला |
| 9. | दण्डी | इनिँ | दण्ड वाला |
| 10. | स्रग्वी | विनिँ | माला वाला |
| 11. | देही | इनिँ | देह वाला |

इस प्रकार पुल्लिंग आदि के पश्चात् उपर्युक्त शब्दों में स्त्रीलिंग बोधक प्रत्ययों का प्रयोग होता है, जिनसे सामान्यतः शब्द बनते हैं–

| क्रम संख्या | पुल्लिंग शब्द | स्त्रीलिंग शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| 1. | साक्षी | साक्षिणी | देखने वाली |
| 2. | पूर्वी | पूर्विणी | पहले काम करने वाली |
| 3. | मायावी | मायाविनी | माया वाली |
| 4. | मेधावी | मेधाविनी | धारणा शक्ति वाली |
| 5. | यशस्वी | यशस्विनी | यश वाली |
| 6. | व्रीही | व्रीहिणी | धान वाली |
| 7. | दण्डी | दण्डिनी | दण्ड वाली |
| 8. | देही | देहिनी | देह वाली |

जैसे कि पूर्व में उल्लिखित देवीकवच आदि स्तोत्र में शक्ति का एक रूप ब्रह्मचारिणी शब्द से निरूपित है। इसका ब्रह्मचारी (णिनिँ) मूलतः पुल्लिंग पद है और इसमें (ङीप्) स्त्रीलिंग का प्रयोग होने से यह **ब्रह्मचारिणी** के रूप में निष्पन्न होता है। इसी प्रकार के प्रयोग निम्नलिखित सरस्वती वन्दना में दृष्टिगोचर होते हैं–

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां **जगद्व्यापिनीम्**।
**वीणापुस्तकधारिणी**मभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीम् पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

इस स्तोत्र में **वीणापुस्तकधारिणी** एवं **जगद्व्यापिनी** आदि शब्द 'इन्' प्रत्ययान्त होने से पुल्लिंग में वीणापुस्तकधारी एवं जगद्व्यापी होंगे, जिनका अर्थ वीणा और पुस्तक को धारण करने और जगत् में व्याप्त रहने वाला है। इन्हीं शब्दों के वीणापुस्तकधारिणी एवं जगद्व्यापिनी स्त्रीलिंग रूप हैं।

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि स्त्रीलिंग आदि का निर्धारण वाक्य–निर्मिति आदि में आवश्यक हैं, यह एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है, क्योंकि संस्कृत वाक्य की संरचना पद के विभक्ति–प्रयोग के बिना नहीं हो सकती और पद में विभक्ति का सुष्ठु प्रयोग शब्द के लिंग–विनिश्चय के बाद ही सम्भव है। जैसे–

**रामः** (पुल्लिंग) की षष्ठी विभक्ति 'रामस्य' होती है, इस आधार पर 'राम की पुस्तक', इस वाक्य का संस्कृत अनुवाद **'रामस्य पुस्तकम्'** होगा। यदि पुस्तक को **आकृति** (स्त्रीलिंग) की कहना हो, तो संस्कृत वाक्य में **'आकृत्याः पुस्तकम्'**, यह अनुवाद होगा। दोनों वाक्यों में प्रयुक्त रामस्य और आकृत्याः पद में षष्ठी (एकवचन) की विभक्ति ही प्रयुक्त है, परन्तु दोनों के प्रयोज्य शब्द–स्वरूप में 'स्य' और 'त्याः' का अन्तर स्पष्ट है। इसका कारण दोनों के भिन्न–भिन्न लिंग (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग) का होना है। 'रामः' अकारान्त पुल्लिंग शब्द है, वहीं 'आकृति' इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द है।

इसके अतिरिक्त स्त्रीलिंग इत्यादि का बोध व्याकरण में सूत्र–विश्लेषण आदि की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पाणिनिकृत *अष्टाध्यायी* में 'नदी संज्ञा' का उल्लेख मिलता है, जिसकी परिभाषा है–

**'यू स्त्राख्यौ नदी'**, अर्थात् दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त नित्य–स्त्रीलिंग शब्दों की नदी संज्ञा होती है। जैसे – श्रेयसी इत्यादि। अब यदि ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का बोध न हो तो 'नदी संज्ञक' शब्दों का ज्ञान सम्भव नहीं। यदि नदी संज्ञक शब्दों का ज्ञान सम्भव नहीं तो नदी संज्ञा से सम्बद्ध व्याकरण में होने वाले विधानों का ज्ञान भी सम्भव नहीं हो सकता, क्योंकि स्वयं पाणिनि के द्वारा 'नदी' का प्रयोग अनेक शब्दों की निष्पत्ति एवं विश्लेषण की प्रक्रिया हेतु सूत्रों में किया गया है। जैसे–

**आण्नद्याः**

अर्थात् नदी संज्ञक शब्दों के बाद 'आट्' (आ) का आगम होता है, बाद में 'ङित्' प्रत्यय (ङे, ङसि, ङस्, ङि आदि विभक्ति वाले प्रत्यय) हों तो। इसी प्रकार **'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः'**, अर्थात् नदी संज्ञक, 'आप्' (आ) अन्तवाले और 'नी' शब्द के बाद 'ङि' को 'आम्' हो जाता है।

स्त्रीप्रत्ययान्त एवं स्त्रीलिंग शब्दों की भूमिका काव्य–सर्जना में वैचित्र्योत्पत्ति के रूप में भी परिलक्षित होती है। संस्कृत साहित्य में अनेक प्रसिद्ध काव्यसर्जक ऐसे हुए हैं, जिनके द्वारा स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग काव्य–शोभाधायक के रूप में किया गया है। जैसे –

**मैथिली** तस्य **दाराः**

अर्थात् मैथिली उसकी पत्नी है। प्रस्तुत वाक्य में स्त्रीवाचक दो शब्दों का प्रयोग किया गया है – 1. मैथिली 2. दाराः। इन दोनों में से मैथिली सीता के लिए प्रयुक्त है, जो मैथिल शब्द में ङीप् नामक स्त्रीप्रत्यय के संयोग से मैथिली रूप में निष्पन्न होकर प्रथमा विभक्ति, एकवचन है। इसके अतिरिक्त दाराः शब्द पत्नी के लिए प्रयुक्त है, जो नित्य बहुवचनान्त पुल्लिंग शब्द है। प्रस्तुत वाक्य में दारा के साथ मैथिली का समानाधिकरण भाव के साथ प्रयोग वक्रता के रूप में किया गया है, जिससे चमत्कार की उत्पत्ति होती है।

स्त्रीलिंग शब्दों का वैचित्र्योत्पत्ति सुकुमारता की अधिकता के प्रकाशन हेतु भी प्रयोग कवियों द्वारा किया जाता है। वस्तुतः कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनके रूप तीन लिंगों (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग) में प्राप्त होते हैं, परन्तु अनेक लिंग सम्भव होने पर भी सौकुमार्यातिशय के लिए काव्यसर्जक 'स्त्री यह नाम सुन्दर है' (नामैव स्त्रीति पेशलम् – *वक्रोक्तिजीवितम्*, 2.22), ऐसा मानकर स्त्रीलिंग का ही प्रयोग करते हैं। जैसे –

एतां पश्य **पुरस्तटीम्**

अर्थात् सामने इस तटी (किनारे) को देखो। सामान्यतः 'तट' शब्द सभी लिंगों में प्रयुक्त हो सकता है, परन्तु सुकुमार भाव को प्रकाशित करने के लिए तट का तटी (स्त्रीलिंग) रूप में प्रयोग किया गया है, जिससे लालित्य ध्वनित होता है।

इसी प्रकार के कुछ–कुछ प्रयोग हिन्दी एवं बोलचाल की भाषाओं में भी देखने को मिलते हैं, जैसे– गाय। प्रायशः सीधापन एवं सरलता के लिए पुल्लिंगवाची मोहन आदि शब्दों की गाय (स्त्रीलिंग) से समानता बताई जाती है, जबकि विशेषण–विशेष्य और उपमान–उपमेय सम्बन्ध को बताने के लिए सामान्यतः दोनों पदों (विशेषण और विशेष्य आदि) में एक समान लिंग, वचन एवं विभक्ति का प्रयोग होता है, परन्तु लोक–व्यवहार में 'मोहन' पुल्लिंग शब्द है एवं 'गाय' शब्द स्त्रीलिंग के रूप में ही प्रयुक्त होता है। जैसे–

**मोहन** स्वभाव से एकदम **गाय** है।

प्रस्तुत वाक्य में मोहन की सरलता एवं सहजता को गाय की उपमा के द्वारा बताया गया है।

इसी प्रकार सौन्दर्य आदि गुणों की स्थिति स्त्रियों के लिए रूढ़ होने के कारण पक्षी आदि प्रजातियों के पुल्लिंगों में भी स्त्रीलिंग का आरोपण कर दिया जाता है। तात्पर्य यह है कि पक्षियों में सौन्दर्य आदि गुण सामान्यतः पुल्लिंगों में होते हैं, किन्तु कहीं–कहीं व्यवहार में मनुष्याभ्यास के कारण उन पुल्लिंग शब्दों के साथ स्त्रीलिंग क्रियावाची शब्दों का प्रयोग कर लिया जाता है। जैसे – कोयल कूँक रही है। 'कोयल' पुल्लिंगवाची शब्द है, परन्तु उपर्युक्त वाक्य में स्त्रीलिङ्गवाची क्रियापद का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार काव्य–सृष्टि अथवा साहित्य–सृष्टि में जो भूमिका अर्थ के साथ वाक्/वाच् की है, जगत् के सर्जन में शिव के साथ शक्ति की है, नृत्य के क्षेत्र में ताण्डव के साथ लास्य की है, वही भूमिका भाषा के व्यवहार में पुल्लिंग शब्दों के साथ स्त्रीलिंग शब्दों की है। भाषा के सुकुमार एवं लालित्यपूर्ण व्यवहार में इनका अध्ययन एवं प्रयोग अपरिहार्य है। अतः आवश्यक है कि इनके (स्त्रीलिंग शब्द) समुचित अध्ययन और प्रयोग के लिए स्त्रीप्रत्यय एवं स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाए।

## अनुवाद

1. अश्वाः क्षेत्रे तृणं खादन्ति धावन्ति च।

   (घोड़ियाँ मैदान में घास खाती और दौड़ती हैं।)

2. मूषिका रात्रिकाले अन्नं चोरयति।

   (चुहिया रात्रिकाल में अन्न चुराती है।)

3. योगिनी ग्रामतः पर्वतं प्रति गच्छति तत्रैव ध्यानं करोति च।

   (योगिनी ग्राम से पर्वत की ओर जाती है और वहाँ ध्यान करती है।)

4. शोधकर्त्री नाट्यशास्त्रस्य टीकाग्रन्थं पठति।

   (शोधकर्त्री नाट्यशास्त्र के टीकाग्रन्थ को पढ़ती है।)

5. महर्षिपाणिनि अष्टाध्यायी इति व्याकरणशास्त्रीयग्रन्थस्य प्रणेता अस्ति, यः लोकेभ्यः माहेश्वरसूत्राणि अपि प्रदत्तवान्।

   (महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी नामक व्याकरणशास्त्रीय ग्रन्थ के प्रणेता हैं, जिन्होंने संसार को माहेश्वर–सूत्र भी दिया।)

6. प्रज्ञा मातामह्या सह आपणतः वाटिकां गच्छति।

   (प्रज्ञा नानी के साथ बाजार से वाटिका जाती है।)

7. वर्तमानकाले युवतयः शिक्षाविज्ञानकलाक्षेत्रेषु अग्रणी सन्ति।

   (वर्तमान काल में युवतियाँ शिक्षा, विज्ञान और कला के क्षेत्रों में अग्रणी हैं।)

8. तापसी शकुन्तलया सह उपवनं गत्वा पुष्पाणि फलानि च चिनोति।